arunjaity1:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:05 PM Page 156

प्रभाष जोशी

ऐसे जीवट पर तिलक

नानाजी के 80 वर्ष पूरा होने पर 1997 में मुंबई से एक स्मारिका प्रकाशित की गई थी, जिसमें नानाजी के काम के बारे में कई लोगों ने अपने विचार व्यक्त किए थे। इसी स्मारिका में प्रभाष जोशी का लेख छपा था। आज जब न तो नानाजी हैं और न ही प्रभाष जी, यह लेख अपने आप में बहुत कुछ कहता है।

नानाजी फिर नए काम में लग गए हैं। नानाजी यानी नानाजी देशमुख। नया काम यानी चित्रकूट में उन्होंने आरोग्यधाम शुरू करवाया है। आरोग्यधाम कोई अस्पताल नहीं है। यह एक प्रयोग है कि कैसे ऐसी परिस्थिति और अवस्था बनाई जाए कि व्यक्ति को रोग ही न हो। अंग्रेजी में एक पुरानी कहावत है- प्रिवेंशन इज बेटर देन क्योर। उपचार से रोग को रोकना बेहतर है। नानाजी के आरोग्यधाम में प्रयोग इसका भी नहीं है कि रोगों को कैसे रोका जाए, वहां मानकर चला गया है कि मनुष्य की साधना की प्रेरणा दे या मजबूर करे। उमर उनकी एक कम अस्सी है। इतनी उमर में तो यों ही देह धारे के रोग पीछे लग जाते हैं और आदमी थक कर या खुट कर बैठ जाता है।

लेकिन उमर के यानी बुढ़ापे के रोग भी उन्हें नहीं है। इंद्रियां जितनी शिथिल हो जाती हैं, उतनी भी नहीं हुई हैं। स्वभाव से संयमी जीव हैं, इसलिए बावजूद इसके कि आंखें कमजोर हुई हैं और सुनाई ऊंचा देता है, वे आम तौर पर सजग, सक्रिय और साधना में लगे आदमी हैं। यों भी उनासी बरस की उमर में कोई ऐसा काम शुरू करे जो उसने अब तक किया न हो तो कोई कह सकता है कि यह

सहज-स्वाभाविक स्थिति निरोगी है। जो भी रोग हैं वे सब जीवन शैली, पद्धति और पर्यावरण के हैं। कुछ रोग वंशानुगत भी हैं। लेकिन जीन्स में भी वे बाहर से आते हैं और फिर अंदर के होकर रह जाते हैं। प्रयोग यह है कि मनुष्य निरोगी रहने की अपनी सहज स्वाभाविक स्थिति में कैसे रह सकता है। उपचार या निदान या आरोग्य नानाजी का विशेष या चुना गया कार्यक्षेत्र नहीं है। वे डाक्टर नहीं हैं, स्वास्थ्यकर्मी नहीं हैं। समाजसेवी हैं। एक समाजसेवी की सामूहिक और सामाजिक स्वास्थ्य में जितनी रुचि होनी चाहिए उतनी रुचि से तो नया प्रयोग करने के लिए आरोग्यधाम नहीं खोला जाता। विचार बहुत ही तंग कर रहा हो तो किसी सुयोग्य साथी को कहा जा सकता है, भाई यह प्रयोग करने लायक है, या कर के देखो। नानाजी ने ऐसा नहीं किया। खुद ही प्रयोग में लग गए।

आप जानते हैं कि नानाजी कोई बीमार रहने वाले व्यक्ति नहीं हैं। ऐसा कोई असाध्य रोग उन्हें नहीं है जो उन्हें आरोग्य की सामूहिक बुढ़ापे का लक्षण है। चित्रकूट में नानाजी का यह प्रयोग करना एक और कारण से भी मुझे विलक्षण लगता है। बल्कि कहूं कि इस कारण से ही विलक्षण लगता है तो ज्यादा सही होगा। अभी कोई छह-सात महीने पहले ही मध्यप्रदेश सरकार ने ऐसी परिस्थितियां पैदा की कि उन्हें ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद से इस्तीफा देना पड़ा। बोली में कहें तो चित्रकूट में ही वह विश्वविद्यालय उनसे छीन लिया गया।

अब नानाजी अगर उसके कुलाधिपति बने या नियुक्त किए गए होते और सरकार को लगा होता कि विश्वविद्यालय वैसा नहीं चल रहा है जैसा कि चलना चाहिए या सरकार की यानी मुख्यमंत्री की इच्छा से नहीं चल रहा है और इसलिए छीना जाता तो कोई बात भी थी। लेकिन चित्रकूट में एक ऐसा ग्रामोदय विश्वविद्यालय बने जिसमें से निकले स्नातक कहीं नौकरी की तलाश में न जाएं और जब स्नातक हो चुकें तो उनके पास उत्पादक रोजगार अपने आप हो,

नाना प्रकार के नानाजी

ऐसा प्रयोग करने का विचार नानाजी को ही आया था और यह प्रयोग करने के लिए ही वे दिल्ली और अपने दूसरे सेवा कार्य छोड़ कर चित्रकूट में चिमटा गाड़ कर बैठे थे।

कोई पांच-छह साल पहले वृंदावन जा कर उन्होंने एक भजनाश्रम की चित्रकूट में मंदाकिनी के किनारे पड़ी जमीन और खंडहर पड़ा छोटा-सा भवन लिया था। उस यात्रा में अपन भी उनके साथ थे और आने-जाने के छह-सात घंटों में विश्वविद्यालय के प्रयोग के बारे में ही बात होती रही। चीमटा गाड़कर बैठने का यह स्थान लेने के कोई साल-डेढ़ साल बाद उनके दोस्त रामनाथ गोयनका का निधन हो गया। नानाजी ने इसे अपने दोस्त के स्मारक में बदल दिया है।

यहीं बैठ कर नानाजी ने स्वावलंबी नवयुवक बनाने के प्रयोग की शुरूआत की। तब मध्यप्रदेश में सुंदरलाल पटवा की भाजपा सरकार थी और उसने नानाजी के प्रकल्प को न सिर्फ अपनाया बल्कि विधानसभा से कानून पास करके ग्रामोदय विश्वविद्यालय की स्थापना करने का संकल्प किया। फरवरी इकानवें में जब विश्वविद्यालय का शिलान्यास हुआ तो उस कार्यक्रम में अपन मौजूद थे। नानाजी के उत्साह को अपन ने महसूस किया था और उनके सपने को अपनी आंखों देखा था। चूंकि विचार नानाजी का था और वही यह प्रयोग करने वाले थे, इसलिए विधानसभा में ही पारित कानून के अनुसार इस विश्वविद्यालय का कुलाधिपति राज्यपाल को नहीं, नानाजी को बनाया गया था। यानी मध्यप्रदेश सरकार ने एक तरह से नानाजी को स्वावलंबन की शिक्षा देने वाले विश्वविद्यालय को खड़ा करने और चलाने का प्रयोग करने की सुविधा दी थी। कोई डेढ़ साल तक सरकार का सहयोग संकल्प के अनुसार चलता रहा। भवन आदि तेजी से बनने लगे, हालांकि उसके पहले ही नानाजी ने धार्मशालाओं और बेकार पड़े मठों में विश्वविद्यालय का काम शुरू कर दिया था।

मुझे याद है कि भोपाल में माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय की संचालन समिति की एक बैठक में तब के महानिदेशक ने कहा था कि सरकार ने जो भी वचन दिए हैं वे पूरे नहीं हो रहे हैं। क्यों? क्योंकि राजनैतिक इच्छाशक्ति की कमी है। इस विश्वविद्यालय के बाद संकल्पित ग्रामोदय विश्वविद्यालय इसी विधानसभा के संकल्प से बने हैं। एक में खानापूर्ति हो रही है और दूसरे में काम बड़ी तेजी से चल रहा है। यह सुनते हुए मेरे सामने नानाजी के विश्वविद्यालय के बनते भवन और धर्मशालाओं में चलती कक्षाएं घूम गई थीं। पत्रकारिता विश्वविद्यालय में सरकार कोई सक्रिय रुचि नहीं ले रही थी, जबकि ग्रामोदय विवविद्यालय के नानाजी के काम में कोई रुकावट ही नहीं थी। मैं दोनों ही विश्वविद्यालयों के काम को अंदर से और नजदीक से जानता था और समझता था कि दोनों में अंतर नानाजी के व्यक्तित्व, उत्साह और लगन का है। यह मुख्यमंत्री की इच्छाशक्ति का उतना सवाल नहीं था जितना नानाजी की इच्छाशक्ति, हैसियत और पुण्याई का।

फिर मध्यप्रदेश में सुंदरलाल पटवा की भाजपा सरकार अयोध्या कांड के कारण डिसमिस कर दी गई और वहां राष्ट्रपति शासन लग गया। पर नानाजी को दिक्कत आ गई हो, ऐसा नहीं लगा। साल भर में विधानसभा चुनाव के बाद कांग्रेसी सरकार बनी और दिग्विजय सिंह उसके मुख्यमंत्री बने। तब भी नानाजी की दिक्कतें बढ़ गई हों, ऐसा नहीं लगा। साल भर तो कामकाज ठीक चलता ही रहा। फिर मुश्किलें आने लगीं। सरकार की तरफ से जो पैसा स्वीकृत मद से आना था, उसके आने में पहले ढिलाई हुई और फिर आया ही नहीं। स्वावलंबी स्नातक बनाने के प्रयोग करने वाले विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों और कर्मचारियों को वेतन मिले, इसलिए नानाजी को बैंकों से लाखों रुपए उधार लेने पड़े। उधार चुकाने के लिए भी सरकार से पैसा लेना टेढ़ी खीर हो गया। न सीधी उंगली से घी निकले न टेढ़ी से। सरकार ने डब्बे में घी आने ही नहीं दिया।

जिस किसी आदमी से मिलने पर काम निकल सकता हो, उस हर व्यक्ति से नानाजी मिले। सबने कहा कि इसमें तो अनियमित कुछ है ही नहीं और यह तो ऐसा काम है कि रुकना ही नहीं चाहिए, आप फिकर मत कीजिए, हम देखते हैं। अब या तो देखने को कुछ था ही नहीं या देखने वालों को जो दिखता था उसे वे बता और हटा नहीं सकते थे और इनमें प्रधानमंत्री, केंद्रीय मंत्री, मुख्यमंत्री सभी शामिल थे। आखिर मध्यप्रदेश की सरकार ने अपने वित्त और शिक्षा मंत्री को अध्ययन करने के लिए चित्रकूट भेजा। नानाजी कहते हैं कि दोनों ने उनके प्रयोग की प्रशंसा, सराहना जो भी कहा जा सकता है, की। लेकिन बाद में मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने बताया कि उनकी रपट अनुकूल नहीं है और इस कारण उन्हें धन

लेखक परिचय

लेखक गांधीवादी विचारधारा के मूर्धन्य चिंतक व पत्रकार थे। नानाजी की विचारधारा से असहमत होते हुए भी उनके काम से वे बेहद प्रभावित थे। जनसत्ता के संस्थापक संपादक रहे (स्वर्गीय) श्री प्रभाष जोशी नानाजी के राजनैतिक जीवन के अंतिम दौर से लेकर उनके सामाजिक जीवन तक के साक्षी रहे।